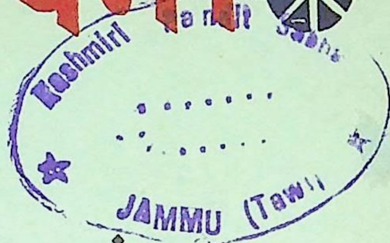
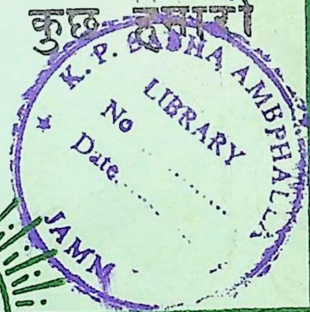
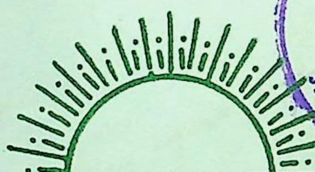
कल्पना



कविताएं

कुछ आपकी कुछ हमारी







ऐ० के० वातल



कल्पना

कविताएं

कुछ आपकी कुछ हमारी

SHINE ON ME FATHER THAT
I MAY REFLECT YOUR LIGHT

ऐ०के० वातल

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य १२ रुपए

सोल डिस्ट्रभूयटर :-

गुप्ता स्टेशनरी मार्ट

मुर्क्कजी बाज़ार, ऊधमपुर - 182101

मूद्रिक :- राजिन्द्रा प्रैस, ऊधमपुर दूरभाष : ६५४

स्व० पिता जी, श्री श्याम लाल वातल की
समृति में ।

भूमिका

युवा अनुभूतियाँ जब सर्जनात्मक अक्ष पर साकार हो जाती हैं तो सृजनकर्ता को संतोष प्राप्त होता ही है, इस के अतिरिक्त वह 'अनुभव' सामूहिक हो चलते हैं और अन्य लोगों को प्रभावित करते हैं। कविता करना आस-पास के जीवन को ग्रहण कर, अपने-पराये दर्द को अनुभव कर, दुख-सुख जीवन-मरण इत्यादि की परिभाषा तलाशने का एक प्रयास है। कविता करना एक साधना है और साधना सभी नहीं कर पाते।

प्रस्तुत कविता-संग्रह में मानवीय संवेदनाओं को काव्य-बद्ध करने की चेष्ठा की गयी है। मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि कुछ अहिंदी भाषी युवकों ने हिंदी में 'रचना' करने का प्रयास किया है। मैं इन सब को बधाई का पात्र मानता हूं और आशा करता हूँ कि आने वाले समय में इन के विचारों में परिपक्वता आयेगी तथा कविता में अधिक सुढ़ोलता व सुँदरता।

मेरी ढेरों शुभ-कामनाएँ।

कुरूक्षेत्र
22-9-92

रा० ना० भट्ट

परिचय

हिन्दी का नाम मात्र ज्ञान रखना जहाँ गर्व की बात है वही "नीम हकीम" की संज्ञा देना भी अनुचित नहीं होगा। इस कविता-सग्रंह का सम्पादन करने में मुझे प्रसन्नता इसलिए हो रही है क्यों कि यह विभिन्न प्रकार के अनुभवों/कल्पनाओं का रुपान्तर है।

इस रचना में मुझे सब सम्बन्धों से जो प्रोत्साहन मिला, मैं उसका आदर करता हूँ। मासिक पत्रिका "सरिता" से जो प्रेरणा और सामग्री मिली, उसका वर्णन करना शायद मेरे लिए संम्भव नहीं है।

मैं विषेशकर डा० रा० ना० भट्ट, जो कि कुरूक्षेत्र विश्व विद्यालय के Linguistic विभाग में कार्यत है उन का आभारी हूं जिन्हों ने इस संग्रह की रचना करने में, मेरा उत्साह बढ़ाया।

इसके अतिरिक्त मैं उन सब शुभ चिन्तक प्राणियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिन्हों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में मेरी सहायता की।

हिन्दी भाषी न होने के कारण इस सग्रंह में त्रुटियाँ रहीं हूंगो। में श्रद्धालु पाठकों से अनुरोध करता हूं कि मुझे इस सग्रंह की त्रुटियों और अशुद्धियों से अवगत करें, ताकि मैं उन्हें सुधार सँकू।

ऊधमपुर
26-9-92

ऐ० के० वातल

सूची

1

जीवन कर्त्तव्य

बोल सको तो मीठा बोलो,
कटु बोलना मत सीखो ।
बचा सको तो जीव बचाओ,
जीव मारना मत सीखो ।

बता सको तो राह बताओ,
पथ भटकाना मत सीखो ।
जला सको तो दीप जलाओ,
हृदय जलाना मत सीखो ।

बिछा सको तो फूल बिछाओ,
कांटे बिछना मत सीखो ।
मिटा सको तो अहंकार मिटाओ,
प्यार मिटाना मत सीखो ।

कमा सको तो पुण्य कमाओ,
पाप कमाना मत सीखो ।
दे सको तो जीवन दे दो,
जीवन लेना मत सीखो ।

बोल सको तो सच बोलो,
झूठ बोलना मत सीखो ।

—oOo—

2

ज्वार

ऐ चित्त यह तमाशा दिखाते हो,
क्या यहीं उचित है।
कभी हँसाते और कभी रुलाते हो,
क्या यही उचित है॥
जब मनुष्य आन्द से विभौर बैठा हो,
चौन और स्नेह के गुन गाता हो,
तभी, क्या-क्या सुझाते हो,
क्या यही उचित है॥
कभी सबों से स्नेह-कभी सबों से बैर,
कभी झूठ और कभी सत्य कहलवाते हो,
क्या यही उचित है॥
मानव शरीर में - प्रधान समान हो तुम,
तुम से यह अपराध,
क्या यही उचित है॥
सुलझाते, समझाते, धीरज देते हो,
कभी ऊंचा, कभी नोचा करवाते हो,
क्या यही उचित है।
आह ! प्रसन्नता क्या - आन्द की बात ही नहीं,
फिर भी मुँह मुडवाते हो,
क्या यही उचित है॥
विशवास तो बहुत करता था अब वह भी नहीं,
मित्र से क्या उत्तर दूं,
क्या यही उचित है॥
अब मित्र से प्रार्थना है रसीलो बातों से प्रसन्नता दे आपको,
आप अतयन्त सूने हो,
क्या यही उचित है॥
प्रेमी के शरोर में खामोश बैठे हो,
प्रेम की वातें भी नहीं करते,
क्या यही उचित है॥

—0—

दर्द

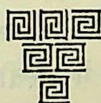
दर्द बिलकुल न घटता तुम्हारे बिना,
एक पल भी न कटता तुम्हारे बिना।

डूबा खामोशियों में रहा रात दिन,
गम का सागर न पटता तुम्हारे बिना।

भर है जाता धुँआ सा अकेले में कुछ,
एक तिल भर न छंटता तुम्हारे बिना।

ध्यान तुम में लगा तो लगा रह गया,
फिर किसी में न बंटता तुम्हारे बिना।

कोई रख मुझ पर कैसा गया भार है,
वह हटाए न हटता तुम्हारे बिना।



4

गजल

रहजन थे राह में सभी,
रहबर न था कोई ।

हमराह थे साए मेरे,
पैकर न था कोई ।

माना के उन्होने न किया,
मुझको संगसार,
सच ये है उनके सामने,
पत्थर न था कोई ।

मैने कहा जो" आपने",
बिस्मिल किया मुझे,
कहता है मेरे पास तो,
खंजर न था कोई ।

महलो में बैठे लोग यही,
सोचते रहे,
उनकी तरह इस मुल्क में,
बेघर न था कोई ।

रातों में उनकी चाँद था,
तारे थे कहकशां,
तन्हा की शब में दोस्तो,
अख्तर न था कोई ।

—oOo—

5

सोंच

सोचते - सोचते दीवाना बन गया मैं,
बलवान था परन्तु निर्बल बन गया मैं।

कभी इधर कभी उधर,
कभी बाहर कभी बीतर,
चैन है कहाँ बे चैन बन गया मैं।

काम, क्रोध, मद, लोभ और मोह,
सभी मेरे चित्त के आकार में,
आशा हो के भी निराश बन गया मैं।

बार-बार कहता रहता हूं,
सुनने वाले भी कान नहीं देते,
चिलाते - चिलाते अब गूगां बन गया मैं।

न जाने क्या-क्या सूझता है,
अभी बीज नही फल ढूंडता हूं,
फूल कहां, परन्तु बेताव बन गया मैं।

अगर कहूं तो कितना और किसे,
सब जानते हैं सब ज्ञान है उसे,
धीरज नहीं देते, अपराद बन गया मैं।

प्रेमी तो प्रेम से फिर पुकारता है,
आशा है कि समस्या रहेगी नहीं,
निकट हो के भी पुकारते रह गया मैं।



बिखरे मोती

कंकड़ चुन चुन महल बनाया, लोग कहे घर मेरा है,
न घर मेरा, न घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा है।

मुझे कोई गम न था, अगर गम था तो यह गम था,
कि जहाँ किश्ती मेरी डूबी, वहाँ पानी बहुत कम था।

मेराज़े हयात है फना हो जाना, तकमील वसल है जुदा हो जाना,
उठ जाए अगर दिल से खुदा का पर्दा इंसान का मुमकिन है खुदा हो जाना।

न कुछ हम हंस के सीखे हैं न कुछ हम रो के सीखे हैं,
जो कुछ थोड़ा सा सीखे हैं किसी का हो के सीखे हैं।

न भूले हैं न भूलेगे तेरी सरगर्मिया अब तक,
चमन के पत्तो-पत्तो पर है तेरी दास्ता अब तक।

कल का दिन किसने देखा है आज का दिन खोए क्यों,
जिन घड़ियो में हंस सकते है उन घड़ियो में रोए क्यों।

इस चमन की बहारो में बहार तुम्हारी है,
इस चमन के गुलशन में गुलज़ार तुम्हारी है।

=0=

तलाश

दूर सफर तक साथ निभाए कोई ।
सोई यादों को जगाए कोई ॥

बुझाने पर भी बुझने न पाए ।
आग ऐसी दिल में लगाए कोई ॥

न जाने क्यों जी करता है ।
रूठूं तो हँस कर मनाए कोई ॥

हुस्न की गोद में सिर रखा हो ।
उंगलियाँ बालों में फिराए कोई ॥

आँखो में आँखे डालकर मेरी ।
पल्लू दाँतों में दबाए कोई ॥

जाम मयखाना न याद आए कभी ।
नजरों से इतनी पिलाऐ कोई ॥

फिर से जाग उठे बचपन के सपने ।
थपकियाँ दे दे कर सुलाए कोई ॥

—oOo—

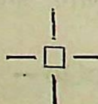
शिकायत

जब प्यार नहीं है तो भुला क्यों नही देते,
खत किस लिए रखे हैं जला क्यों नही देते।

क्यों तुमने लिखा अपनी हथेली पे मेरा नाम,
मैं हरफे गलत हूं तो मिटा क्यो नहीं देते।

लिल्लाह शबो रोज़ की उलझन से निकालो,
जब मेरे नहीं हो तो बता क्यो नहीं देते।

किस वास्ते तड़पाते हो, मासूम मसीहा,
हाथों से मुझे जहर पिला क्यों नहीं देते।



बहारो के वो दिन

साथ जो हमने गुज़ारे नज़ारो के वो दिन,
जाने कब फिर लौट आँए बहारो के वो दिन।

यों तो चल रहा है यह जिदंगी का कारवाँ,
पर खुशी कोई नही हसरते हैं बेजुवां,
तुम नहीं तो कुछ नहीं जीना भी है कठिन,
तुम गले मिलो तो हैं सितारो के वो दिन॥

दूरियों ने है गजब की डोर बांध दी,
चाँद तन्हा है, गगन में दूर चाँदनी,
वक्त ने छीने हमारे सहारों के वे दिन,
साथ जो हमने गुजारें नज़ारो के वो दिन॥

जाने कब फिर लौट आए बहारो के वे दिन।



नेहा कब बरसाँएगे

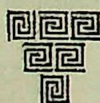
काले काले मेघ जुल्फ के नेहा कब बरसाँऐ गे,
उमस भरी ज़हरीली रातें कब तक गिनते जाँए गे।

यादों के सूने जंगल हैं अपने चारो और खड़े,
तेरे होठों पर शहदीले संबोधन कब मुसकाँए गे।

खनक रहे मांदल के स्वर में सूनापन गहराता है,
रुप - चादनी में कुल पल कब हमको नहलाए गे।

तपती सांसो की सरगम में सपनो का वन झुलस रहा,
बोल प्यार के तेरे मुख से हम कब सुन पाँएगे।

इंतज़ार के पर्वत ऊँचे, तनहाई लंबी पगडंडी,
तुम्ही बताओ सपनो की मंज़िल कब तक पा जाँएगे।



तेरी निगाहें

तेरी निगाहों से निगाहें मिलाना मैं चाहता हूं,
नीर बन नयनो में बस जाना में चाहता हूं ।

तु आरुफ होने से पहले हो गया तलबगार तुम्हारा,
हमनशी तुम्हारा बनना मैं चाहता हूं ।

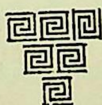
तेरी दीदार को तरसना, भटकना मैं चाहता हूं,
दीवाना तुम्हारा कहलाना मैं चाहता हूं ।

हो जाए इक मुलाकात मयस्सर,
सफर की इब्तिदा करना मैं चाहता हूं ।

आवाज़े मुहब्बत सुनना मैं चाहता हूं,
प्यारा मधुर संबोधन पाना मैं चाहता हूं ।

हो जाओ मेहरबान यदि तुम,
सहारा तुम्हारा बनना मैं चाहता हूं ।

वियोग के तलातुम में तड़पाना मैं चाहता हूं,
प्रेमपाश में बृध जाना मैं चाहता हूं ।



दो दस्तक देकर

आँखों से हो दिल में उतर जाइए,
दो घड़ी के लिए तो ठहर जाइए ।

रात भर अध खुले गेस उड़ते रहे,
महक लेकर कली की बिखर जाइए ।

आईने पर परछाइयाँ छा रही,
आप बाहर वहाँ से निकल जाइए ।

आशा की किरण खेलती पलको पे,
ले मनुहार मिलने की सवर जाइए ।

ये बहारे सदा पूछती है हमे,
आप क्यों है खफा यह बता जाइए ।

ये टूटे हुए सपनो के द्वार हैं,
दो दस्तक देकर मत बिसर जाइए ।



प्रशंसा

तेरी आँखे जैसे झील कोई,
तेरी ज़ुल्फ़ें जैसे शाम-ए-सुकूँ।

कोई आ कर पल दो पल ठहरे,
कुछ बात सुने कुछ बात करे।

तेरी आहट पा कर चाँद उगा,
तेरी धड़कन सुन कर सुबह हुई।

तेरा ज़िक्र चला तो फूल खिले,
तेरे होंठ खुले तो फूल झड़े।

मैं ने आकर उन को उठा लिया,
पलकों में अपनी छिपा लिया।

तेरी नज़र उठी, तेरी नज़र झुकी,
मैं ने दिल में तुझ को बसा लिया।



14

दर्पनो के निकट

प्यार का है ये चंद न तुम्हारे लिए,
सात रंगो का नंदन तुम्हारे लिए।

गंध की आम्रपाली लगी बाँधने,
आज सांसो का बंधन तुम्हारे लिए।

फूल पर छापने लग गई है हवा,
अब परागों का चुबंन तुम्हारे लिए।

ढूंड लाया है सागर अतल में उतर,
मोतियो वाले कगंण तुम्हारे लिए।

दर्पनों के निकट बुन रही बाँसुरी,
इंद्रजालों का गुजंन तुम्हारे लिए।

नैन के व्याकरण में उलझ प्राणमन,
बन गए आज खजंन तुम्हारे लिए।

oOo

15

हम जानते हैं

तुम कहो या न कहो,
हम जानते हैं।

होठ से यों ही छलकती,
क्यों हँसी द्वारखिड़की,
पर बढ़ी क्यों चौकसी,
तुम कहो या न कहो,
हम जानते हैं।

क्यों नहीं आंचल ठहरता,
अंग में क्यों रंगा मन,
फागुनों के रंग में,
तुम कहो या न कहो,
हम जानने हैं।

लाज क्यों आने लगी,
हर एक से, क्यों नहीं दिखते,
इरादे नेक से,
तुम कहो न कहो,
हम जानते है।

शाम से क्यों अब उदासी,
घेरती, नींद आँखों से नज़र
क्यों फेरती,
तुम कहों या न कहों,
हम जानते हैं।

oOo

दिल में समाने के दिन

चाँदनी में नहाने के दिन आ गए,
दीप सा झिलमिलाने के दिन आ गए।

भाव की नाव में बैठकर रात भर,
प्रीत के गीत गाने के दिन आ गए।

गंध उन की महकने लगी पूवास,
उन के दिल में समाने के दिन आ गए।

शाम अंगूरी लगती, सबुह सिंदूरी,
जाम सा छलछलाने के दिन आ गए।

तन दहकने लगा, मन बहकने लगा,
कुछ लुटाने और पाने के दिन आ गए।



चार पंक्तियां

जा उसे कहदे सलाम मरीज़ का,
मर्ज़ उसे मालूम ही है थोड़ी दवाई देगा।

ज़रा प्यार से मुस्करा कर उसका हाथ थाम लेना,
कहना मरीज़ को देखने ज़रुर आना।

दीवाना उसने कर दिया एक बार देख कर,
हम कुछ भी न कर सके बार बार देख कर।

काश हम सीखें फूलों से मुदाए जिन्दगी,
जो खुद भी महकते हैं और जहाँ को भी महकाते हैं।

—oOo—

शायद आदमी को आदमी न मिले

अगर यही हाल रहा आदमी का आदमी से,
अजब नहीं, फिर दुनिया में आदमी न मिले।

बेटे को माता पिता से,
भाई को भाई बहन से,
अगर रिश्ता न रहा ॥० अजब............

पति को पत्नी से, पत्नी को पति से,
कर्मचारी को आर्चाय से,
अगर सहयोग न मिला ॥० अजब............

पड़ोसी को पड़ोसी से,
रिश्तेदार को रिश्तेदार से,
अगर प्यार न रहा ॥० अजब............

वर्ग को वर्गो से,
यार को यारों से,
अगर अच्छा सम्बन्ध न रहा ॥० अजब............

एक देश को दूसरे देश से,
राहु, केतू को मेष से,
अगर सही झुकाव न रहा ॥० अजब............

प्राकृति को सुन्दरता से,
वायु को प्रदूषन से,
अगर ताल-मेल न रहा ॥० अजब............

ऊर्भा खर्चे को खप्त से,
आवश्य सामग्री को भण्डार से,
अगर मेक्दार न रहा ॥० अज़ब............

—oOo—

सम्पादक के बारे में

सम्पादक का जन्म 17 नवम्बर 1959 को ज़िला अन्नतनाग (जम्मु व कशमोर) के फोहर गाँव में हुआ। प्राथमिक शिक्षा राजकीय डिग्री कालेज अन्नतनाग में पाई। 1980 में जम्मु व कशमीर बोर्ड ऑफ टेक्निकल अजुकेशण श्रीनगर दुवारा सिविल इंजिनीरिंग में डिपलोमा पाकर, 1985 में इनसटिइशन ऑफ इंजिनीरिर्स कलकत्ता से सिविल इंजिनीरिंग में डिग्री प्राप्त की। 1985 में इस स्संथान के असोसियेट मेम्बर बने और 1987 में मेम्बर बनने का अवसर प्राप्त हुआ। सम्पादक इंडियन रोड़स कांग्रेस के भी स्थाई मेम्बर हैं।

सम्पादक ने 'आवास और निर्माण' पर दो पुस्तके लिखी हैं और अनेक तकनीकी एवं समाजो विषयो पर अनुसंधान रचनाए लिखी हैं।

वे 1980 से विभिन्न विभागो में काम कर चुके हैं जिन में जे० एण्ड के० पी० डब्लू० डी०, राष्ट्रीय भवन निर्माण सगठंन, राष्ट्रीय सहकारी आवास संघ शामिल हैं। वे 1987 से भारत सरकार के उपक्रम, इंडियन टेलीफोन इण्डसट्रीज़ में कार्यंत हैं और आजकल अधिकारी अभिन्ता (सिविल) के पद पर काम कर रहें हैं।

इन को दो बार, भारत में आयोजित अन्तराष्ट्रीय सेम्नार में भाग लेने का भी अवसर मिला हैं।



